

समस्त सिद्धियां जिसमें निहित है जिसके एक एक बीजाक्षर महान बीज मंत्र है

समझे प्रत्येक बीज मंत्र को और
अपनाएं जीवन में
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

कहा जाता है कि आदिगुरु शंकराचार्य जब सब और से त्रस्त हो गए शरीर से क्षीण हो गए तब मां भगवती ने स्वयं आकर दर्शन दिए तथा अपने त्रिपुर सुन्दरी स्वरूप की साधना करने हेतु कहा और शंकराचार्य ने त्रिपुर सुन्दरी को अपनी आराध्य देवी के रूप में स्थापित कर उनके मंत्र का जप किया और यही नहीं इस मंत्र के - 'हीं कएईल हीं हसकहल हीं सकल हीं' प्रत्येक बीज मंत्र पर एक श्लोक की रचना की ठीक इसी प्रकार योगियों ऋषियों ने गुरु मंत्र 'ॐ' परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः के प्रत्येक बीज मंत्र पर भी एक एक श्लोक की रचना की है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस महान तेजस्वी मंत्र में कितना बड़ा ज्ञान का सागर भरा हुआ है

“प”

पकार	पुण्यं	परमार्थ	चिन्त्यं	रम्या	सुवाणी	दित्यं च	नेत्रं
परोपकारं		परमं	पवित्रं	अग्निं	त्रिरूपं	भवरोग	वैद्यं
परम	हंस	रूपं	प्रणवं	परेशं	लक्ष्मी	च लाभं	भवति प्रदोषे
प्रणम्यं	प्रणम्यं	निखिलं	त्वमेवं ॥१॥	श्री राजमान्यं	निखिलं	शरण्यम् ॥२॥	

गुरु मंत्र में प्रदर्शित 'पकार' बीज का अर्थ है पूर्णता की पराकाष्ठा जीवन में सर्वोच्चता परमार्थ चिंतन, परोपकार तथा जीवन की पावनता प्रणव स्वरूप परमेश्वर के स्वरूप को प्राप्त करना तथा परमहंस की गति को प्राप्त करके गुरुमय होना अतः दिव्य विभूति भगवत पूज्यपाद गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रणम्य एवं सर्व स्तुत्य है।

“र”

'रकार' बीज की साधना से वाणी में रमणीयता नेत्रों में दिव्यता तथा शरीर तथा मन के भीतर अग्नि त्रय के जागरण माध्यम से समस्त रोगों का शमन तथा भवरोग से मुक्ति अन्नत ऐश्वर्य प्राप्ति संभव होती है रकार बीज की साधना राज मान्यता तथा निखिल की शरणागति प्रदान करती है।

“म”

महाभाजदं च महागोहं निघ्नं
महोच्चं पदं वै प्रदानं सदैवं
महनीयं रूपं मधुराकृतिं तं
महागण्डलं तं निखिलं नमामि ॥३॥

'मकार' बीज माधुर्य का सूचक है मकार बीज की साधना से जीवन में माधुर्य तथा परमानन्द की उपलब्धि होती है समस्त मोह बंधन को दूर करके महोच्च पदवी प्रदान करती है, इस बीज की साधना से साधक मधुर आकृति एवं महनीय रूप युक्त तथा समस्त लोकों में महिमा मण्डित होता है, ऐसे निखिल तत्व का मैं नमन करता हूँ।

“त”

तत्त्व स्वरूपं तपः पूतदानं
तारुण्यं युक्तिं शक्तिं ददाति
तापत्रयं दूरयति तत्त्वगर्भः
तमेव तत्पुरुषमहं प्रणम्यं ॥४॥

'तकार' बीज की साधना से तत्त्व मसि रूप वेद महावाक्य की उपलब्धि संभव होती है क्योंकि तत्त्व ज्ञान में इस साधना का अत्यधिक महत्व है अपने स्वरूप ज्ञान के लिए इसमें तरुणता की शक्ति, ताप त्रय की विमुक्ति तथा रहस्य मय ज्ञान को साधक प्राप्त करता है उस परम पुरुष गुरुदेव निखिल को बारम्बार नमन करता हूँ।

“त्वा”

विभाति विश्वेश्वर विश्वमूर्ति
ददाति विविधोत्सव सत्त्व रूपं
प्राणालयं योग क्रिया निदानं
विश्वात्मकं तं निखिलं विधेयम् ॥५॥

'वकार' बीज की साधना से सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमय गुरुत्व शक्ति की प्राप्ति होती है तथा इसी जीवन में आनन्दमयता पूर्ति और क्रिया योग के उस गुह्य तत्व को उदघाटित करके समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करते हुए निखिलमय हो जाता है।

“य”

यशस्करं योग क्षेम प्रदं वै
योगश्रियं शुभगणवन्तवीर्यं
यज्ञावन्तं कार्यं निरतं सुखं च

योगेश्वरं तं निखिलं तदेवम् ॥६॥

'यकार' बीज की साधना से योग के यम नियम आदि आष्टांग योग को सम्पन्न करते हुए यशस्वी पुरुष योग क्षेम की चिन्ता से रहित योग के समस्त आयाम को पूर्ण करते हुए अनन्त शक्ति युक्त होकर यज्ञ विद्या को सर्वांग रूप से प्राप्त करता है तथा योगेश्वर निखिल के ब्रह्ममय स्वरूप में अधिष्ठित हो जाता है।

“ना”

निरागयं निर्मल भाव भाजनं
नारायणस्य पदवीं समुदारभावं
नवं नवं नित्यं नवोदितं तं
नमामि निखिलं नवकल्प रूपम् ॥७॥

'नकार' बीज की साधना से साधक रोग रहित सात्विक बुद्धि से युक्त शास्त्र सम्मत नारायण स्वरूप को प्राप्त करके नित्य नवीन जीवन के प्रत्येक क्षण को जीता हुआ कल्पान्त तक गुरुदेव निखिल की शरणागति को प्राप्त करता है।

“रा”

रासं महापूरितं रामणीयं
महालयं योगिजनानु मोदितं
श्री कृष्ण गोपीजन वल्लभं च
रसं रसज्ञं निखिलं तरेण्यम् ॥८॥

'रा' बीज की साधना से महारास की उपलब्धि होती है जिस प्रकार भगवान् कृष्ण गोपियों के साथ रासलीला की उसी तरह साधक भी योग के माध्यम से अपने इष्ट के साथ रसपूर्ण होकर निखिल स्वरूप में अभिसिक्त होता है।

“य”

यां यां विधेयां मायार्थं रूपां
ज्ञात्वा पुनर्मुच्यति शिष्य वर्गः
सर्वार्थं सिद्धिं प्रददाति शुभां
योगेन गम्यं निखिलं प्रणम्यम् ॥९॥

इस द्वितीय 'यकार' की साधना से माया के स्वरूप को जानकर शिष्य बंधन मुक्त होकर सभी श्रेष्ठतम सिद्धियों को प्राप्त करके योगियों के द्वारा गम्य वन्दनीय निखिलेश्वर स्वरूप के रहस्य को प्राप्त करता है।

“ण”

निरंजनं निर्गुण नित्य रूपं
अणोरणीयं महतो महन्तं
ब्रह्म स्वरूपं विदितार्थं नित्यं
नारायणं च निखिलं त्वमेवम् ॥१०॥

‘णकार’ बीज के माध्यम से साधक नादब्रह्म को प्राप्त करके निरंजन तथा निर्गुण ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त करता है तथा अणु से अणु और महान से महान रहस्यमय ब्रह्माण्ड को जानकर नारायण स्वरूप को प्राप्त करता है।

“य”

यज्ञ स्वरूपं यजमान मूर्ति
यज्ञेश्वरं यज्ञ विधि प्रदानं
ज्ञानाग्नि हूतं कर्मादि जालं
याजुष्यकं तं निखिलं नमामि ॥११॥

‘यकार’ बीज की साधना से साधक यज्ञ के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करके अनन्त भेद प्रभेदों को जानकर अपने शुभ अशुभ आदि कर्म रूपी हवि को ज्ञान रूपी अग्नि में आहुति देकर बंधन मुक्त हो जाता है तथा यज्ञ की साक्षात् मूर्ति निखिल स्वरूप में समाहित हो जाता है।

“गु”

गुत्वं गुरुत्वं गत मोह रूपं
गुह्याति गुह्यं गोमृत्त्व ज्ञानं
गोक्षीर धवलं गूढ प्रभावं
गेयं च निखिलं गुण मन्दिरं तम् ॥१२॥

‘गुकार’ बीज अपने आप में अद्वितीय है इसकी साधना से साधक मोह रहित होकर गुरु तत्त्व को प्राप्त करके गुरुमय हो जाता है तथा गौदुग्ध के समान निर्मल ज्ञान को प्राप्त करके गूढ शास्त्र ज्ञान को प्राप्त करता है तथा आनन्दमय युक्त जीवन व्यतीत करता है।

“रु”

रुद्रावतारं शिवभावगम्यं
योगाधिरुढिं ब्रह्माण्ड सिद्धिं
प्रकृतिं वसित्वं स्नेहालयं च

प्रसाद चितं निखिलं तु ध्येयम् ॥१३॥

‘रुकार’ बीज की साधना से साधक शिव भाव को प्राप्त करके योगमय होकर ब्रह्माण्ड के दिव्य सिद्धियों को प्राप्त करता है तथा प्रकृति के बशीभूत न होकर स्नेह युक्त होकर जीवन को अमृतमय बना देता है।

“ॐ”

योगाग्निना दग्ध समस्त पापं
शुभा शुभं कर्म विशाल जालं
शिवा शिवं शक्तिमयं शुभं च
योगेश्वरं च निखिलं प्रणम्य ॥१४॥

इस बीज की साधना से योगरूपी अग्नि में समस्त पाप समूह को दग्ध करके शुभा शुभ कर्म जाल से मुक्त होकर शिव और शक्ति रूप की साधना करके योगेश्वर निखिल स्वरूप को प्राप्त करके दिव्यतम बन जाता है।

“न”

नित्यं नवं नित्य विगुक्त चितं
निरंजनं च नरचित मोदं
ऊर्जस्वलं निर्विकारं नरेशं
निरत्रपं वै निखिलं प्रणम्य ॥१५॥

‘नकार’ बीज की साधना से चिन्ता मुक्त होकर साधक नित्य नवीन जीवन जीता हुआ सभी मोह बाधाओं से रहित सभी प्राणियों को आनन्द देता हुआ अनन्त ऊर्जा युक्त निर्विकार और मनुष्यों में श्रेष्ठ होकर, निखिल के आनन्दमय स्वरूप का ध्यान करता हुआ पूर्णता युक्त जीवन व्यतीत करता है।

“म”

मातृ स्वरूपं ममतामयं च
मृत्युञ्जयं मानप्रदं महेशं
सठ्मंगलं शोक हरं विभुं तं
नारायणमहं निखिलं प्रणम्य ॥१६॥

‘मकार’ बीज की साधना से साधक मातृत्व गुण से युक्त होता है तथा प्रत्येक प्राणियों में दया करने वाला मृत्यु के भय से रहित मंगल स्वरूप, शोक से रहित नारायण की साक्षात् स्वरूप को प्राप्त करता है तथा दिव्यतम इस मानव जीवन को सार्थक करता है।

बहुत थोड़े से समय में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

गुरु मंत्र से

समस्त देवता मंत्रों के अधीन होते हैं और यदि गुरु मंत्र का जप हो, तो किसी अन्य मंत्र को जपने की आवश्यकता ही शेष नहीं रह जाती, हमारे यहां जितने भी शास्त्र, वेद, पुराण लिखे गये, वे सब "गुरु" इन दो अक्षरों पर ही आधारित हैं; जो देवताओं से भी उच्च एवं पूजनीय हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का तेज जिनके भीतर समाहित है।

गुरु मंत्र अपने आपमें छोटा होते हुए भी अत्यधिक क्षमताओं से ओत-प्रोत होता है, क्योंकि इसके एक-एक शब्द का अर्थ अपने आपमें मूल्यवान है, पूरे शरीर को सूर्य के समान बना देने की शक्ति उसमें समाहित है, जो अचूक है, तीक्ष्ण एवं प्रभावकारी है, पूरे शरीर को चैतन्यता प्रदान करने में सक्षम है... यह हर किसी को यूँ ही नहीं प्राप्त हो जाता है, इसके पीछे एक गहन चिन्तन, धारणा छिपी होती है, पूर्ण चेतना युक्त इस गुरु मंत्र में शिष्य ही की पूर्णता निहित है। जो कार्य किसी अन्य देवी-देवता के लम्बे-चौड़े श्लोक व स्तुति गान से नहीं हो पाता, उसे गुरु मंत्र तत्काल कर दिखाता है। मानव की आवश्यकताओं के अनुसार ही मंत्रों की रचना प्राचीन काल में की गई, परन्तु क्लिष्ट होने के कारण, सस्वर व उचित उच्चारण न कर पाने के कारण इनका विपरीत प्रभाव ही अधिक देखने को मिला और मानव की समस्याएं, परेशानियां, बाधाएं रह गई वहीं की वहीं।

आशा को निराशा में बदलते हुए देखा, तभी हमारे ऋषि इस विषय पर गम्भीरता से विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे, कि गुरु मंत्र ही सबसे श्रेष्ठ और तीव्र प्रभावकारी है, जिसका सस्वर उच्चारण भी आसानी से किया जा सकता है, जो अन्य मंत्रों की अपेक्षा महत्वपूर्ण भी है।

यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ जप किया जाय, तो समस्याओं से पार पाने के लिए अन्य कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती, क्योंकि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी अधिक तेजस्वी कहा गया है, वे ही ज्ञान व सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ हैं, भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले हैं, समस्त देवी-देवता तो उन्हीं के इंगित पर नृत्य करते रहते हैं। प्रत्येक गृहस्थ साधक के लिए गुरु मंत्र आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है; जो उनके कष्टों को हमेशा के लिए दूर करने वाला अचूक मंत्र है। जो जिस कामना से, जिस भाव से इसे जपता है, उसे उसके अनुसार ही फल सिद्धि प्राप्त होती है। यदि इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से जपा जाय, तो सफलता निश्चय ही प्राप्त होती है। इसके माध्यम से विभिन्न पुरुषार्थों की सिद्धि होती ही है, जो इस प्रकार है —

स्वयं के अभ्युदय के लिए

जीवन में यदि आप चाहते हैं, कि सफलता आपके कदम चूमे और यदि उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचना है, तो गुरु मंत्र से उत्तम और कोई प्रदर्शक नहीं, जो तुम्हें उच्चता प्रदान कर सके, श्रेष्ठता प्रदान कर सके, तुम्हारे जीवन का अभ्युदय कर सके। साधक "अभ्युदय माला" से निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें —

मंत्र

ॐ वं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर — 180/-

विपत्तियों के नाश के लिए

मानव जीवन है, तो दुःख भी होंगे, कठिनाइयां भी होंगी और विपत्तियां भी आयेंगी ही, पर यदि अन्य कहीं भटकने की अपेक्षा गुरु मंत्र जप पूर्ण निष्ठा के साथ कर लिया जाय, तो समस्त विपत्तियों का नाश स्वतः ही होने लगता है। निम्न मंत्र का "आपदहन्ता माला" से सवा लाख जप करें -

मंत्र

ॐ खं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 195/-

रोग नाश के लिए

गुरु मंत्र से कैसा भी रोग हो, जड़-मूल से समाप्त किया जा सकता है; इससे श्रेष्ठ अन्य कोई उपचार नहीं है, जो कि मनुष्य को रोग मुक्त कर पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान कर सके। निम्न मंत्र का "रुद्र माला" से सवा लाख जप करें -

मंत्र

ॐ रं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 150/-

सौभाग्य प्राप्ति के लिए

यदि बार-बार प्रयत्न करने पर भी भाग्य साथ न दे, तो उस व्यक्ति से दुर्भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं होता, किन्तु यदि व्यक्ति "सौभाग्य माला" से निम्न मंत्र का सवा लाख जप कर ले, तो उससे ज्यादा सौभाग्यशाली भी अन्य कोई नहीं होता, क्योंकि यह दुर्भाग्य की लकीरों को मिटाकर सौभाग्य के अक्षर अंकित कर देने वाला अत्यन्त तेजस्वी मंत्र है।

मंत्र

ॐ क्लीं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 175/-

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

इस मंत्र के माध्यम से अपनी इच्छानुकूल पत्नी को प्राप्त किया जा सकता है, जो सुलक्षणा हो, सौन्दर्यवती हो, साक्षात् लक्ष्मी हो, प्रिया हो; वरना सम्पूर्ण जीवन ही तनाव ग्रस्त हो जाता है, निम्न

मंत्र का "स्निग्धा माला" से सवा लाख जप करें-

मंत्र

ॐ सुं हुं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 175/-

दारिद्र्य, दुःखादि के नाश के लिए

इस मंत्र के माध्यम से जीवन में व्याप्त दुःख, दैन्यता, दरिद्रता जैसे शत्रुओं का नाश कर जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पन्नता प्राप्त करते हुए जीवन को उल्लासित व प्रफुल्लित बनाया जा सकता है। "ऐश्वर्यवर्द्धिनी माला" से निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें -

मंत्र

ॐ क्रीं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 210/-

समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्ति के लिए

इससे बड़ा और सर्वश्रेष्ठ उपाय अन्य नहीं है, जो कि बड़ी-बड़ी उच्चकोटि की साधनाओं में सफलता प्रदान करने में सक्षम हो, क्योंकि गुरु ही मात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जो शुभ और लाभ के प्रदाता हैं और समस्त न्यूनताओं को समाप्त करने वाले हैं। कैसी भी साधना हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, सफलता निश्चित प्राप्त होती ही है। निम्न मंत्र का "साफल्य माला" से सवा लाख जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर - 350/-

इन बीजाक्षरों से संप्रक्त गुरु मंत्र के सवा लाख जप से निश्चित ही उपरोक्त लाभ साधक को प्राप्त होते हैं। यह एक संन्यासी के द्वारा बताये गये तेजस्वी प्रयोग हैं; जो अचूक हैं, पूर्ण लक्ष्य भेदन में समर्थ हैं। मंत्र जप पूरा होने पर माला नदी, तालाब या मंदिर में विसर्जित कर दें।